नं. २१९ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	२ बा.प. बा.अ.	४ प. ४ अ.	४ ३.	४	१ ति.	१ एके.	१ पृ.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुमा. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२०।

नं. २२० बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि	१ बा	४	४	४	१ ति	१ ए	१ पृ.	१ अ	१ न	४	२ कुम	१ अ	१ अ	द्र. ६	२ भ.	१ मि	१ अ	१ अ	२ स

.	. प.				.	के		ौदा.	पुं.		ा. कुश्रु.	सं.	च ा.	भा. ३ अ शु.	अ.	.	सं.	ाह ा.	ाक ा. अ ना.

नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२१।

नं. २२१ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.

							.				.								
१ मि.	१ अ.	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ पृ.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचा.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भा. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

एवं बादरपुढविणिव्वत्तिपज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तव्वा। बादरपुढविलध्दिअपज्जत्तस्स बादरेइंदिय-अपज्जत्त-भंगो। सुहुमपुढवीए सुहुमेइंदिय-भंगो। णवरि सुहुमपुढविकाइओ त्ति वत्तव्वं।

आउकाइयाणं पुढवि-भंगो। णवरि सामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दव्वेण काउ-सुक्क-फलिहवण्ण-लेस्साओ वत्तव्वाओ। तेसिं चेव पज्जत्तकाले दव्वेण

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसी प्रकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये। बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता यह है कि 'सूक्ष्म एकेन्द्रिय' के स्थानपर 'सूक्ष्म पृथिवीकायिक' ऐसा आलाप कहना चाहिए।

अप्कायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय 'पृथिवीकायिक' के स्थानपर 'अप्कायिक' और लेश्या आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल

सुहुमआऊणं काउलेस्सा बादरआऊणं फलिहवण्णलेस्सा। कुदो? घणोदधि-घणवल-यागास पदिद-पाणीयाणं धवलवण्ण-दंसणादो। धवल-कसण-पीयल-रत्ताअंब-पाणीय-दंसणादो ण धवलवण्णमेव पाणीयमिदि के वि भणंति, तण्ण घडदे। कुदो? आधारभूमिमट्टियाए१ (मु. आधार मावे) संजोगेण जलस्स बहुवण्ण-ववहार-दंसणादो। आऊणं सहाववण्णो पुण धवलो चेव।

एवं चेव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा। णवरि पज्जत्तकाले दव्वेण फलिहलेस्सा एक्का चेव। णत्थि अण्णत्थ विसेसो। बादरआउ-काइयणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिण्णि आलावा एवं चेव वत्तव्वा। बादरआउलध्दि- अपज्जत्ताणं बादरआउणिव्वत्तिअपज्जत्त-भंगो। सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुढविकाइय-भंगो। सुहुमआउकाइयणिव्वत्ति-पज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलध्दिअपज्जत्ताणं च सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो।

तेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चेव

लेश्याएं और पर्याप्तकालमें स्फटिकवर्णवाली अर्थात् शुक्ल लेश्या कहना चाहिए। उन्हीं सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत लेश्या कहना चाहिए। तथा बादरकायिक जीवोंके स्फटिकवर्णवाली शुक्ल लेश्या कहना चाहिए, क्योंकि, घनोदधिवात और घनवलयवात व्दारा आकाशसे गिरे हुए, पानीका धवलवर्ण देखा जाता है। यहांपर कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि धवल, कृष्ण, पीत, रक्त और आताम्र वर्णका पानी देखा जानेसे पानी धवलवर्ण ही

होता है, ऐसा कहना नहीं बनता है? परन्तु उनका कहना युक्ति-संगत नही है; क्योंकि आधारभूत भूमीकी भट्टीके संयोगसे जलमें अनेक वर्णका व्यवहार देखा जाता है। किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवल ही है।

इसप्रकार बादर अप्कायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। विशेष बात यह है कि उनके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुक्ल लेश्या ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अप्कायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है। इसी प्रकार बादर अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिए। बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक निर्वृत्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक, सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्यपर्याप्तक और सूक्ष्म अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके समान जानना चाहिए।

तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, बादरतैजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं बादरतैजस्कायिक पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, उन्हीं पर्याप्त नामकर्मके

पज्जत्तापज्जत्ताणं१ (मु. त्ताणं च पज्जत्त-।) तेसिं चेव पज्जत्त-णामकम्मोदयतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्ता-पज्जत्ताणं बादरतेउलध्दिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेंसि चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं२ (मु. त्ताणं पज्जत्त-।) तेसिं चेव पज्जत्तणामकम्मोदय आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयलध्दिअपज्जत्ताणं च जहाकमेण भंगो। णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण, काउ-सुक्क-तवणिज्जलेस्साओ। तेसिं चेव पज्जत्ताणं दव्वेण काउ-तवणिज्जलेस्साओ३ (बादरआऊतेऊ सुक्का तेऊ य x x। जी. ४९७) एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं दोण्हं पि वत्तवं। बादरतेउकाइयाणं४ (मु. बादरकाइयाणं।) तेउ-भंगो। एवं चेव तेसिं पज्जत्ताणं। णवरि दव्वेण तवणिज्जलेस्सा। एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं पि दव्वलेस्सा वत्तव्वा।

सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं५ (मु.- याणं सुहुमभंगो।) भंगो। वाउकाइयाणं तेउ-भंगो।

उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्त अपर्याप्त भेदोंके तथा बादर तैजस्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, बादर अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, उन्हीं पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, तथा बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए।

विशेषार्थ --- तैजस्कायिक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं, इस बातके ध्वनित करनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सदृश' ऐसा कोई पाठ नहीं दिया है। परन्तु पहले अप्कायिक जीवोंके संपूर्ण भेद-प्रभेदोंके आलाप कह आये हैं और यहां तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके कथन करनेका प्रकरण है, इसलिये प्रकृतमें तैजस्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना चाहिए। मूलमें आये हुए 'जहाकमेण' पदसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है।

विशेष बात यह है कि तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और तपनीय लेश्या होती है। तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोतलेश्या और पर्याप्तक बादरजीवोंके तपनीय लेश्या होती है। इसी प्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सामान्य और पर्याप्त इन दोनोंही प्रकारके तैजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेश्या कहना चाहिए। बादरतैजस्कायिक जीवोंके आलाप सामान्य तैजस्कायिकके आलापोंके समान जानना चाहिए। इसी प्रकार बादर तैजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं। विशेषता यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय लेश्या होती है। इसी प्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तैजस्कायिक जीवोंके भी द्रव्यलेश्या कहना चाहिए।

सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। वायुकायिक जीवोंके आलाप तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना

णवरि दव्वेण काउ-सुक्क-गोमुत्त-मुग्गवण्णलेस्साओ१ (तत्र घनोदधयो मुद्‌गसन्निभाः, घनवाता गोमूत्रवर्णाः, अव्यक्तवर्णास्तनुवाताः। त. रा. वा.)। तेसिं२ (मु. तेसिं पज्जत्ताणं) चेव पज्जत्ताणं काउ-गोमुत्तमुग्गवण्णलेस्साओ। एवं बादरवाऊणं तेसिं पज्जत्ताणं च दव्वलेस्साओ हवंति। जदि वि मुग्गा अणेयवण्णा, तो वि रुढिवसा सामलवण्णो मुग्गवण्णो त्ति घेप्पदि। सुहुमवाऊणं सुहुमतेउ-भंगो।

नं. २२२ वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१२ साधा. ८ प्रत्ये. ४	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

२२२वणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बारस जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ,

----

चाहिए। विशेष बात यह है कि, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, गोमूत्र और मूंगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्म जीवोंके कापोतलेश्या और बादर पर्याप्त जीवोंके गोमूत्र और मूंगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। इसीप्रकार बादर वायुकायिक सामान्य जीवोंके और उन्हीं बादर

वायुकायिक पर्याप्त जीवोंके द्रव्य लेश्याएं होती हैं। यद्यपि मूंग अनेक वर्णवाली होती है, तो भी रुढिके वशसे 'श्यामलवर्ण' ही मूंगका वर्ण प्रकृतमें ग्रहण किया गया है। सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म तैजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए।

वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, और बारह जीवसमास होते हैं, जिनमें सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, इस प्रकार प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास होते हैं। बादरनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त बादरनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक- अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, चतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, इस प्रकार साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके आठ जीवसमास होते हैं। चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग

तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फदिकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया, अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं असणिण्णो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२३।

नं. २२३ वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	६ साधा. ४ प्रत्ये. २	४	४	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	१ अौदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचा.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी,

---

योग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें बताये गये बारह जीवसमासोंमेंसे पर्याप्तकालसंबन्धी छह जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमे कहे गये बारह जीवसमासोमेंसे छह अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय,

----

वणप्फदिकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छ्त्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२४।

नं. २२४ वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	६ साधा. ४ प्रत्ये. २	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

														.					

पत्तेयसरीरवणप्फदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयवणप्फदिकाओ, तिण्णि जोगा, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२५।

नं. २२५ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ प्र.प. प्र.अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान,

असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२६।

नं. २२६ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ प्र.प.	४	४	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुमा. कुश्रु.	१ असं.	१ अचा.	द्र. ६ भा. ३ अ	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना

														शु.					.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फदिकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो,

---

छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त कालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

---

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२७।

नं. २२७ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ प्र. अ.	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

एवं णिव्वत्तिपज्जत्तस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा। लध्दिअपज्जत्ताणं पि एगो आलावो पत्तेयवणप्फदि-अपज्जत्ताणं जहा तहा वत्तव्वो। जहा पत्तेयसरीराणं तहा बादरणिगोदपडिट्ठिदाणं पि वत्तव्वं।

साधारणवणप्फदिकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, अट्ठ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फदिकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिछ्त्तं,

----

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते है।

इसीप्रकार निर्वृत्तिपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये। लब्ध्यपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंका एक अपर्याप्त आलाप प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके आलापके समान कहना चाहिए। तथा, जिस प्रकार अभी प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप कहे हैं, उसी प्रकारसे बादरनिगोद-प्रतिष्ठितवनस्पतिकायिक जीवोंकेभी आलाप कहना चाहिए।

साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद इन दोनोंके बादर और सूक्ष्म ये दो दो भेद तथा इन चारोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे आठ जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति एकेन्द्रियजाति, साधारण-वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक;

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा २२८।

नं. २२८ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	ज ी.	प .	प्रा .	सं .	ग.	इं.	क ा .	यो .	वे.	क .	इ ाा .	सं य.	द.	ले .	भ ा.	स .	सं ज्ञि ा	अ ा.	उ .
१ मि .	८	४ प . ४	४ ३	४	१ ति .	१ ए के.	१ व न.	३ अ ौ. २	१ न पुं .	४	२ कु म. कु	१ अ सं .	१ च क्षु .	द्र. ६ भा .	२ भ ा. अ	१ मि .	१ अ सं .	२ अ ाह ा.	२ स ाक ा.

		अ.						का. १			श्रु.			३ अशु.	.			अना.	अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया; मिच्छत्तं असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२२९।

नं. २२९ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४	४	४	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादनित्यनिगोद-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-पर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त, ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययेाग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फदिकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२३०।

नं. २३० साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	२ औ.मि. क	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अना	२ साकार अ

								र्म.						भा. ३ अशु.				हार	नाकार

बादरसाधारणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फदिकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-अपर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययेाग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादर साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त बादरनित्यनिगोद-अपर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय,

औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययेाग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं,

---

छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२३१।

नं. २३१ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	४	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ ए के.	१ व न.	३ औ. २ कार्म. १	१ न्या प.	४	२ कु म. कु श्रु.	१ अ सं.	१ अ चा.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ अ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणबादरवणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२३२।

नं. २३२ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२	४	४	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचा.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरणिगोदवणप्फदिकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि असंजमो,

अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा२३३।

नं. २३३ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	२	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

एवं साधारणसरीरबादरवणप्फदीणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। लध्दि-अपज्जत्ताणं पि एगो अपज्जत्तालावो वत्तव्वो। सव्वसाधारणसरीरसुहुमाणं सुहुमपुढवि-भंगो। णदरि चत्तारि जीवसमासा, सुहुमसाधारणसरीरवणप्फदिकाओ त्ति वत्तव्वो। चदुगदिणिगोदाणं साधारणसरीरवणप्फदिकाय-भंगो।

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर नित्यनिगोद-अपर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादर निगोद वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसी प्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। लब्ध्यपर्याप्तक साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंका भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए। सभी सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोकें आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि जीवसमास आलाप कहते समय 'चार जीवसमास' और काय आलाप कहते समय 'सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकाय' ऐसा कहना चाहिए। चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप साधारणशरीर

तेसिं बादराणं बादरसाधारणसरीरवणप्फदि-भंगो। तेसिं चेव सुहुमाणं सभेदाणं साधारणसरीरसुहुमवणप्फकाइय-भंगो। णवरि चदुगदिणिगोदो त्ति वत्तव्वं। एवं णिच्चणिगोदाणं पि। णवरि एत्थ णिच्चणिगोदो त्ति वत्तव्वं।

नं. २३४ त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग ा.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ ा.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१४	१०	६ प. ६ प.	१०, ७	४ क्षी	४	४ द्वी	१ त्रस	१५	३ अ	४ अ	८	७	४	द्र. ६	२ भ	६	२ सं	२ अ	२ स

		६ अ . ५ प. ५ अ .	९, ७ ८, ६ ७, ५ ६, ४ ४, २, १	ण सं .		. त्री. च तु. पं चे.	ा.	अ यो ग.	प र ा.	क षा .				भा . ६. अ ले .	ा. अ .		. अ सं . अ नु .	ाह ा. अ ना .	ाक ा. अ ना . यु . उ .

२३४तसकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि,

---

वनस्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। उन्हीं बादर चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप बादर साधारणशरीर वनस्पतिकायके आलापोंके समान होते हैं। सामान्य पर्याप्त अपर्याप्त भेदसहित उन्हीं सूक्ष्म चतुर्गति निगोद जीवोंके आलाप साधारणशरीर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि साधारण शरीरके साथमें 'चतुर्गति निगोद' इतना और कहना चाहिए। इसी प्रकार नित्यनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि यहांपर 'नित्यनिगोद' इस पदको कहना चाहिए।

त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर--- चौदहों गुणस्थान, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, दो प्राण; एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, व्दीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान

सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।

नं. २३५ त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	५ व्दी. प. त्री. प. चतु.	६ ५	१० ९ ८ ७ ६ ४ १	४ क्षीणसं.	४	४ व्दी. त्री. च. पं.	१ त्रसा.	१ १, म. ४ व. ४ औ.	३ अपगा.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु

	प. सं. प. अस ं. प.							१ वै. १ अ ा. १ अ योग									.		. उ .

२३५ तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, पंच पज्जतीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, एगारह जेागा अजोगो वि अत्थि तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठणाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिध्दिया अभवसिध्दिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो

भी है, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयेागी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर--- चौदहों गुणस्थान, व्दीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीण-संज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, व्दीन्द्रिय जातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसम्बन्धी चार योगोंको छोडकर शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों

कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिध्दिक, अभव्यसिध्दिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान

णेव असण्णिणो, वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा।